❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
योगिराज श्री कृष्ण
के
5243वें जन्मोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 41, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 अगस्त, 2018 से रविवार 2 सितम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

केरल में बाढ़ से भीषण त्रासदी : सहयोग के लिए आर्यसमाज के बढ़े हाथ

महाशय धर्मपाल जी द्वारा केरल बाढ़ पीड़ितों के मकान बनवाने में सहयोग की घोषणा

सारा आर्यजगत केरल की जनता के साथ – सुरेशचन्द्र आर्य

दिल्ली के आर्यजन निभाएंगे अपनी भूमिका– धर्मपाल आर्य

कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन एवं महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेदाश्रम, कालीकट द्वारा राहत सामग्री का वितरण

केरल में बाढ़ से हुई भीषण तबाही में जहां सरकार की ओर से अनेक राहत कार्य किये जा रहे हैं वहीं कश्यप वेद रिसर्च फाउन्डेशन आश्रम एवं महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेदाश्रम कालीकट (केरल) के तत्त्वावधान में बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए भोजन सामग्री, पहनने के कपड़े, बिस्कुट, पानी की बोतलें इत्यादि पहुंचाने हेतु शिविर लगाकर राहत सामग्री का वितरण किया गया। राहत कार्यों का नेतृत्व आचार्य एम. आर. राजेश, विपिन आर्य, मुरलीधरन, वैदिक राकेश आर्य, शरद आर्य ने किया।

केरल बाढ़ आपदा में राहत व सहयोग के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सहयोग की अपील की गई है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने कहा कि सारा आर्यजगत केरल जी बाढ़ पीड़त जनता के साथ है। महाशय धर्मपाल जी ने कालीकट क्षेत्र में केरल के बाढ़ पीड़ितों के कल्याणार्थ मकान बनवाने में हर सम्भव सहयोग की घोषणा की। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि दिल्ली के आर्यजन बाढ़ पीड़ितों के कल्याणार्थ महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने दानदाताओं से अपील करते हुए कहा कि आर्य समाज देश में आई हर आपदा में जनमानस की नि:स्वार्थ सेवा और सहयोग का कार्य करता रहा है। हमें आशा है इस

– शेष पृष्ठ 8 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन –2018 दिल्ली

25-26-27-28 अक्टूबर तदनुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ वि. २०७५

नीदरलैंड-बेल्जियम के आर्यजनों को महासम्मेलन का आमन्त्रण

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली – 2018 के आयोजन की तैयारी एवं आमन्त्रण के लिए दिनांक 13 अगस्त को आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैंड – आर्य समाज फासनेड के अन्तर्गत आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की बैठक आयोजित की गई। इससे पूर्व सभी आर्यजनों ने एक साथ यज्ञ किया तथा प्रार्थना उपासना मन्त्रों के साथ ईश्वर का धन्यवाद किया। बैठक को सम्बोधत करते हुए सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने सभी को अधिक से अधिक संख्या में भारत पधारने का आमन्त्रण दिया। बैठक में उपस्थित सभी आर्यजनों ने अत्यन्त उत्साह का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर फासनेड के प्रधान

– शेष पृष्ठ 2 पर

वेद-स्वाध्याय

संगठन = संघटन का महान आधार

समेत विश्वे वचसा पतिं दिव एको विभूरतिथिर्जनानाम्।
स पूर्व्यो नूतनमाविवासत् तं वर्तनिरनु वावृत एकमितपुरु।। - अथर्व. 7/21/1
ऋषिः **ब्रह्मा।।** देवता - **आत्मा।।** छन्दः - **जगती।।**

शब्दार्थ-विश्वे = हे सब लोगो, सब भाइयो! **दिवः पतिम्** = प्रकाशपति परमेश्वर के प्रति **वचसा** = एक वाणी से **समेत** = एकत्र हो जाओ; चूंकि **एकः विभूः** = वह एक ही सर्वव्यापक **जनानाम्** = सब जनों का **अतिथिः** = अतिथि बना हुआ है। **सः पूर्व्यः** = पुराना **नूतनम्** = इस नये (संसार) को **आविवासत्** = सेवन कर रहा है, व्यास कर रहा है, अतः **तम्** = उसके प्रति **वर्तनिः** = जो मार्ग **अनुवावृते** = जाता है, वह **एकं इत्** = उस एक के प्रति ही किन्तु **पुरु** = बहुत प्रकार से, नाना प्रकार से जाता है।

विनय- आओ! तुम सब आओ, हे मनुष्यो! तुम सब इकट्ठे होकर आओ और एक वाणी से उस 'दिवः पति' के स्तोत्र गाओ। वही हम सबको इकट्ठा कर सकता है। वही एक सूत्र की तरह हम सबको जोड़नेवाला है, क्योंकि वह एक विभु, वह एक सर्वव्यापक, हम सब मनुष्यों में सततरूप से व्याप्त है। हम सब जनों में अतिथि है। हम सभी का समान रूप से वह मेहमान बना हुआ है, अतः हम सबके उस एक पूज्य द्वारा, हम सबके उस एक उपास्य द्वारा, हम सब मनुष्य परस्पर जुड़ सकते हैं और असल में जुड़े हुए हैं भी। वह एकरस पुराण है और यह बदलता हुआ संसार नित्य नया होता रहता है, पर वह पुराण इस नित्य नये संसार का नित्य नये रूप से सेवन कर रहा है, इसमें नित्य नये रूप से व्यापा हुआ है। इसलिए उसे प्राप्त करना चाहता हुआ यह संसार अपने-अपने ढंग से ही उसकी ओर जा सकता है, अतः यह सच है कि जो मार्ग हमें उसकी ओर ले जाता है वह निःसन्देह हम सबको केवल उस एक की ओर ले-जाता है, परन्तु वह हमें विविध प्रकार से-प्रत्येक व्यक्ति के अनुसार उसके अपने-अपने निराले प्रकार से-ले-जाता है। हम सब यद्यपि अपने-अपने ढंग से उस एक उपास्य देव की उपासना करेंगे, पर अपने-अपने ढंग से उपासना करते हुए भी हम सभी का उपास्य देव वह एक ही हे, अतः आओ, उस अपने एक देव के नाम पर हम सब-हम सब-के-सब मनुष्य-एक हो जाएं, मिल जाएं, उस एक प्रभु के झण्डे के नीचे इकट्ठे हो जाएं और हम सब-के-सब वाणी से उसके यशः-गीत गाएं।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बाढ़ और अंधविश्वास के बीच डूबता केरल

.....सवाल ये भी है कि बाढ़ में डूबे लोगों को तो भारतीय सेना उपयुक्त साधनों से बचा सकती है लेकिन अंधविश्वास में डूबे लोगों को किन साधनों से बचाए, यह कोई समझ नहीं पा रहा है? इस अंधविश्वास का शिकार सामान्य जन ही नहीं बल्कि भारतीय रिजर्व बैंक के बोर्ड में ऊँचे पद पर आसीन एस गुरुमूर्ति जैसे लोग हैं.....

देश का दक्षिणी राज्य केरल पिछले करीब 100 साल की सबसे भीषण बाढ़ का सामना कर रहा है। पिछले दिनों भारी बारिश, भूस्खलन और बाढ़ में करीब 300 से अधिक लोगों की मौत हो गई। सेना और एनडीआरएफ के जवान दिन-रात राहत कार्य में जुटे हैं। इस भयंकर जल प्रलय में लोग जीवन और मौत के बीच जूझ रहे हैं। लेकिन इससे भी दुखद बात यह है कि इस प्राकृतिक आपदा के खिलाफ जहाँ लोगों को एकजुट होकर सामना करने का हौसला दिया जाना चाहिए वहां उल्टा मौत के मुंह से बचे लोगों को अंधविश्वास में डुबोया जा रहा है। लोग कह रहे हैं केरल उन लोगों की वजह से डूब रहा है जिन्होंने सबरीमाला मंदिर के अनुशासन में हस्तक्षेप किया। भगवान अयप्पा गुस्से में हैं और बाहरी लोगों के दखल देने के कारण केरल के लोगों को दंडित कर रहे हैं। ज्ञात हो इस महीने की शुरुआत में, सुप्रीम कोर्ट ने केरल के सबरीमाला मंदिर में मासिक धर्म के उम्र वाली महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध को चुनौती देने वाली याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रखा था। कुछेक लोगों का मानना है कि केरल को बाढ़ का सामना इसी वजह से करना पड़ रहा है।

सवाल ये भी है कि बाढ़ में डूबे लोगों को तो भारतीय सेना उपयुक्त साधनों से बचा सकती है लेकिन अंधविश्वास में डूबे लोगों को किन साधनों से बचाए, यह कोई समझ नहीं पा रहा है? इस अंधविश्वास का शिकार सामान्य जन ही नहीं बल्कि भारतीय रिजर्व बैंक के बोर्ड में ऊँचे पद पर आसीन एस गुरुमूर्ति जैसे लोग हैं जिन्हें हाल ही में आरबीआई में पार्ट टाइम गैर-आधिकारिक निदेशक के रूप में नियुक्त किया है। गुरुमूर्ति ने लिखा है सुप्रीम कोर्ट के जजों को यह देखना चाहिए कि इस मामले में और सबरीमाला में जो भी हो रहा है उसके बीच में क्या कोई संबंध है। अगर इन दोनों के बीच संबंध होने का चांस लाख में एक हो तो भी लोग अयप्पन के खिलाफ किसी भी तरह के फैसले को स्वीकार नहीं करेंगे। यदि इस मामले में और बारिश में हल्का सा भी कनेक्शन हुआ तो लोग नहीं चाहेंगे कि फैसला भगवान अयप्पन के खिलाफ जाए।

असल में हजारों वर्ष से चली आ रही परंपराओं के कारण हिन्दू धर्म में विश्वास-अंधविश्वास बन गए है? ये विश्वास शास्त्रसम्मत है या कि परंपरा और मान्यताओं के रूप में लोगों द्वारा स्थापित किए गए हैं? ऐसे कई सवाल हैं जिसके जवाब ढूंढ़ने का प्रयास कम ही लोग करते हैं और जो नहीं करते हैं वे किसी भी विश्वास को अंधभक्त बनकर मानते चले जाते हैं और कोई भी यह हिम्मत नहीं करता है कि ये मान्यताएं या परंपराएं तोड़ दी जाएं या इनके खिलाफ कोई कदम उठाए जाएं।

कुछ लोग कह रहे हैं कि इतिहास में केरल के अन्दर कभी भी, कुछ भी बुरा नहीं घटा। हमें अविश्वास का अधिकार है। लेकिन सदियों से चली आ रही अपनी प्रथा को छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। जबकि केरल में बाढ़ का असली कारण कोई देवीय प्रकोप नहीं है इस विनाशकारी बाढ़ से ठीक एक महीने पहले केंद्रीय गृह मंत्रालय के एक आंकलन में केरल की बाढ़ को लेकर सबसे असुरक्षित 10 राज्यों में रखा गया था। साथ ही पिछले माह चेतावनी दी थी कि केरल राज्य जल संसाधनों के प्रबंधन के मामले में दक्षिण भारतीय राज्यों में सबसे खराब स्तर पर है। ऐसा लगता है कि एक महीने बाद ही इस सरकारी रिपोर्ट के केरल में इसके परिणाम भी मिलने लगे हैं। जल प्रबंधन अधिकारियों और विशेषज्ञों का कहना है कि यदि प्रशासन कम से कम 30 बांधों से समयबद्ध तरीके से धीरे-धीरे पानी छोड़ता तो केरल में बाढ़ इतनी विनाशकारी नहीं होती। इससे बचा जा सकता था। एक तरह से देखा जाये तो जल प्रबन्धन से जुड़े तमाम संस्थान और राज्य सरकार अपनी नाकामी सबरीमाला के अंधविश्वास की ओट में छिपा देना चाहती है।

दरअसल तमाम अध्ययन और केन्द्रीय जल प्रबन्धन से जुड़े लोगों के बयानों से यह भी स्पष्ट है कि केरल में बाढ़ आने से पहले काफी ऐसा वक्त था जब पानी को छोड़ा जा सकता था। जब पिछले हफ्ते पानी उफान पर था, तब 80 से अधिक बांधों से एक साथ पानी छोड़ा गया, जो इस तबाही का सबसे बड़ा जिम्मेदार है।

असल में इस राज्य में कुल 41 नदियां बहती हैं। आपदा प्रबंधन नीतियां भी हैं लेकिन इस रिपोर्ट के आने के बावजूद केरल ने किसी भी ऐसी तबाही के खतरे को कम करने के लिए कोई कदम नहीं उठाए। हालाँकि पहले के वर्षों में पिछले चार महीने के दौरान जितनी बारिश होती थी इस बार केवल में ढाई महीने पहले ही इससे 37 फीसदी अधिक बारिश हुई है। लेकिन इसका कारण प्रबंधन नीति रही या अंधविश्वास ये लोगों को सोचना होगा।

कौन भूल सकता है कि ऐसा ही हादसा 2015 में चेन्नई में हुआ था और साल 2013 में केदारनाथ त्रासदी भी इसी देश में हुई थी। यदि यहाँ भी अंधविश्वास से बाहर निकलकर सच का सामना करें तो पर्यावरणविद इसके लिए जंगलों की कटाई को दोष दे रहे हैं। तेजी से होते शहरीकरण और बुनियादी ढांचों के निर्माण की वजह से बाढ़ की विभीषिका से प्राकृतिक तौर पर रक्षा करने वाली दलदली जमीनें और झीलें गुम होती जा रही हैं। लगातार हो रहे शहरीकरण से पेड़-पौधे कटने लगे और उनकी जगह कॉटेज और मकान बनने लगे। भारत के उन दूसरे हिस्सों में भी जहां वनों की कटाई की गई है, वहां बहुत कम समय में भारी बारिश की वजह से पहले भी तबाही मच चुकी है। इसे किसी भी अंधविश्वास से मत जोड़िए। पर्यावरण की रक्षा के साथ इस समय केरल के लोगों को मदद की जरूरत है न कि अंधविश्वास की। - ***सम्पादक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

श्री सुरेन महाबली, वेद प्रचार मंडल के उपाध्यक्ष डॉ. सूर्य प्रसाद बीरे, श्रीमती श्यामा गोबिन्द, श्रीमती कर्मलेखा, सुश्री राजश्रीबीरे, सुश्री श्रुति बीरे, शैलेष बीरे, श्री रामपाल आर्य, आर्यसमाज आसन से अमरीश तिवारी, मुकेश बिहारी, पं. दातादीन, नरदेव आर्य, सुश्री पद्मा, जगदीश तिवारी सहित अन्य अनेक महानुभावों के साथ-साथ बेल्जियम आर्यजनों ने भी उत्साह के साथ भाग लिया।

सभी उपस्थित सदस्यों ने अधिकाधिक संख्या में महा सम्मेलन में पहुंचने एवं अधिकाधिक सहयोग करने का आश्वासन दिया।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● **प्रचार संस्करण (अजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● **विशेष संस्करण (सजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● **स्थूलाक्षर सजिल्द** 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

श्री कृष्ण जन्माष्टमी (3 सितम्बर) पर विशेष

कुछ ऐसे थे महाभारत के श्रीकृष्ण

.....जिन्होंने योगिराज श्रीकृष्ण के विचारों को आत्मसात किया, वह इस चक्कर में फंस ही नहीं सकते। उनके पास जरूर सवाल होंगे कि जो श्री कृष्ण नग्न द्रोपदी को ढ़क सकते हैं क्या वे श्रीकृष्ण गोपियों को नग्न देखना पसंद करते होंगे? कितनी विरोधभाषी बात है एक ही चरित्र से लोगों ने दो अलग-अलग कार्य करा दिए। इसीलिए महापुरुषों की जिंदगी कभी भी ऐतिहासिक नहीं हो पाती सदा धार्मिक हो जाती है ....

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तिथि की घनघोर अंधेरी आधी रात को मथुरा के कारागार में वसुदेव की पत्नी देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण ने जन्म लिया था। यह तिथि उसी शुभ घड़ी की याद दिलाती है और सारे देश में बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। हर वर्ष की भांति एक बार फिर श्रीकृष्ण जी का जन्मदिवस का उत्सव निकट आ रहा है। एक बार फिर वही होगा जो होता आया है। जगह-जगह दही-हांड़ी के आयोजन होंगे। भागवत गीता के पाठ होंगे, कहीं कथावाचक योगी राज श्रीकृष्ण को माखन चोर बताकर गोपियों से उनकी रासलीला का वर्णन करते दिखेंगे तो कोई गोपियों के कपड़े चुराने का वर्णन करेंगें सजे पंडाल और मंदिरों में जमा लोग चटकारे ले-लेकर कर अपने घरों की ओर लौट जायेंगे। जब यह सब कुछ होगा लोग सोचेंगे कि कृष्ण का जन्म होगा लेकिन असल मायने में ये कृष्ण का जन्मदिवस नहीं बल्कि गीता में कहे गये उनके विचारों की हत्या होगी।

कथा वाचकों ने मन्त्र घड़ दिया कि जब-जब धर्म की हानि होगी मैं वापस आऊंगा, यानि मेरा जन्म होगा। ये लोग खुद तो कायर थे ही वीर लोगों को भी प्रतीक्षा में बैठा दिया कि कुछ मत करो धर्म की हानि होने पर प्रभु खुद आ जायेंगे। कहा जाता कि चमत्कारों से प्रभावित होकर उत्पन्न हुई श्रद्धा धर्म के विनाश का कारण बनती है लेकिन जिन्होंने गीता के सच्चे अर्थों को जाना है, जिन्होंने योगिराज श्रीकृष्ण के विचारों को आत्मसात किया, वह इस चक्कर में फंस ही नहीं सकते। उनके पास जरूर सवाल होंगे कि जो श्री कृष्ण नग्न द्रोपदी को ढ़क सकते हैं क्या वे श्रीकृष्ण गोपियों को नग्न देखना पसंद करते होंगे? कितनी विरोधाभाषी बात है एक ही चरित्र से लोगों ने दो अलग-अलग कार्य करा दिए। इसीलिए महापुरुषों की जिंदगी कभी भी ऐतिहासिक नहीं हो पाती सदा धार्मिक हो जाती है जब हम पीछे लौट कर देखते हैं तो हर चीज प्रतीक हो जाती है दूसरे अर्थ ले लेती है जो अर्थ कभी नहीं रहे होंगे वह भी जन्म लेते हैं।

इसी कारण श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों की जिंदगी एक बार नहीं लिखी जाती शायद सदी में बार-बार लिखी जाती है। हजारों लोग लिखते हैं हजारों व्याख्या होती चली जाती हैं फिर धीरे-धीरे श्रीकृष्ण की जिंदगी किसी व्यक्ति की जिंदगी नहीं रह जाती श्रीकृष्ण एक संस्था हो जाते हैं। फिर वह अंधश्रद्धा के सबूत हो जाते हैं। जब ऐसा होता है तो श्रीकृष्ण मंदिरों के पुजारियों के व्यापार हो जाते हैं। संस्थाओं की दान पेटियों के कान्हा बन जाते हैं वे राधा के प्रेमी हो जाते हैं, वह रासलीला के श्रीकृष्ण बन जाते हैं। वे गोपियों के कान्हा हो जाते हैं फिर वे गीता के वो श्रीकृष्ण कहाँ रह जाते हैं जो मानवता को कर्मयोग का रास्ता दिखाते है।

ध्यान से पढ़े तो भागवत के श्रीकृष्ण में और महाभारत के श्रीकृष्ण में तालमेल समझना कोई बड़ी बात नहीं। दोनों में बड़ा अंतर दिखेगा। गीता के श्रीकृष्ण बड़े गंभीर हैं, धर्म, आत्मा, परमात्मा, योग और मोक्ष की बात करते हैं। कहते हैं- 'जब मनुष्य आसक्तिरहित होकर कर्म करता है, तो उसका जीवन यज्ञ हो जाता है किन्तु भागवत के श्रीकृष्ण एकदम गैर गंभीर वे माखन चुरा रहे हैं, नहाती हुई लड़कियों के कपड़े चुरा रहे हैं। कितना विरोध है दोनों में एक तरफ परम आत्मा है जो परम को जानती है जो रण में निराश अर्जुन को आरम्भ और अंत की व्याख्या सहज भाव से गम्भीर मुस्कुराहट के साथ समझा रही है कि अर्जुन तू रुकभाग मत! क्योंकि जो भाग गया, स्थिति से, वह कभी भी स्थिति के ऊपर नहीं उठ पाता, जो परिस्थिति से पीठ कर गया, वह हार गया। दूसरी ओर भागवत में एक स्वरचित पात्र है जो चोरी कर रहा है और माँ से झूठ बोल रहा है। क्या दोनों एक हो सकते हैं?

कुछ लोग कह सकते हैं नहीं यही श्रीकृष्ण का बाल्यकाल था और बचपने में बच्चे ऐसा ही करते हैं तब ऐसी स्थिति में श्रीकृष्ण को समझना बहुत आवश्यक है। श्रीकृष्ण महाभारत में एक पात्र हैं जिनका वर्णन सबने अपने-अपने तरीके से किया सबने श्रीकृष्ण के जीवन को खंडो में बाँट लिया, सूरदास ने उन्हें बचपन से बाहर नहीं आने दिया, सूरदास के श्रीकृष्ण कभी बच्चे से बड़े नहीं हो पाते। बड़े श्रीकृष्ण के साथ उन्हें पता नहीं क्या खतरा था? इसलिए अपनी सारी कल्पनायें उनके बचपन पर ही थोफ दीं। रहीम और रसखान ने उनके साथ गोपियाँ जोड़ दीं, इन लोगों ने वह श्रीकृष्ण मिटा दिया जो वेद और धर्म की बात कहता है और मीरा के भजन में दु:ख खड़े हो गये, इस्कॉन वालों ने अलग से श्रीकृष्ण खड़ा कर लिया, श्रीकृष्ण का जो असली चरित्र कर्मयोग का था, जो ज्ञान का था, जो नीति का था, जिसमें धर्म का ज्ञान था, जिसमें युद्ध की कला थी वह सब हटा दिया नकली खड़ा कर दिया।

धर्म और इतिहास में श्रीकृष्ण अकेले ऐसे व्यक्ति हैं, जो धर्म की परम गहराइयों और ऊंचाइयों पर होकर भी अहंकार से परे थे। श्रीकृष्ण समस्त को स्वीकार कर रहे हैं, श्रीकृष्ण दुख को भी नहीं पकड़ रहे हैं, सुख को भी नहीं पकड़ रहे हैं। गीता के श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि शरीर मूल तत्व नहीं है, मूल तत्व आत्मा है, जन्म आरम्भ नहीं है और मृत्यु अंत नहीं है क्योंकि आत्मा की यात्रा अनंत है अत: शरीर की यात्रा यानि जन्म मरण पर कैसी खुशी, कैसा उत्सव! और कैसा शोक? ***-विनय आर्य, महामन्त्री***

क्रान्तिकारियों की कथा

अमर शहीद राजगुरु

गतांक से आगे -

सरकार की ओर से फ़ौजदारी के उस समय के नामी वकील जगतनारायण मुल्ला 500 रुपये रोज़ पर और उनके साहबज़ादे आनन्दनारायण मुल्ला बतौर उनके 'जूनियर' 100 रुपये पर सरकारी वकील नियुक्त किये गये थे। लखनऊ में इनके नाम की सड़क को 5 मई, 1973 से रामप्रसाद 'बिस्मिल' मार्ग कर दिया गया है। तत्कालीन कांग्रेस सरकार को बधाई, क्योंकि लखनऊ की शायद यही सबसे गन्दी गली है। क़साईबाड़े के चौराहे से अमीनाबाद तक जाती है। बीच रास्ते पर लोटती गायें-भैंसे, ताड़ीख़ाना, शराबख़ाना आदि के इसी रास्ते पर दर्शन होते हैं। भले आदमी का निकलना दुश्वार है। कम से कम 1981 तक तो इसकी यही हालत थी।

इस कश्मीरी बाप-बेटे की जोड़ी के अलावा एक अन्य कश्मीरी पंडित श्यामसुन्दर नारायण बमरू भी 100 रुपये रोज़ मेहनताने पर सरकारी वकील नियुक्त किये गये थे। किन्तु दौराने- मुक़द्दमा उन्हें इतनी ग्लानि महसूस हुई कि एक सप्ताह बाद वे स्वयं ही अलग हो गये। उनके ज़मीर ने इन देशभक्तों के ख़िलाफ़ ग़द्दारी करना स्वीकार नहीं किया। मुल्ला से ही मिलते-जुलते एक और नमक हलाल थे बैरिस्टर हरिश्चन्द्र गुप्ता।

सफ़ाई के वकीलों में थे कलकत्ता के बैरिस्टर बी. के. चौधरी, लखनऊ के प्रो. कृपाशंकर हजेला, हरकरणनाथ मिश्र, आर. एफ. बहादुरजी, गोविन्द बल्लभ पंत, अजीत प्रसाद जैन, गोपीनाथ श्रीवास्तव, मोहनलाल सक्सेना और चन्द्रभानु गुप्त। ये सभी देशभक्त विद्वान क्रांतिकारियों की ओर से मुफ़्त में वकालत करते थे।

ब्रिटिश गुप्तचर अधिकारियों ने बनवारीलाल और इन्द्रभूषण को इक़बाली गवाह बनाने में बेहतरीन कामयाबी हासिल की। अदालत में मुल्ला जो भी चाहते, उनके मुंह से उगलवाते रहे।

चूंकि मुक़द्दमा शुरू होने से पहले ही ब्रिटिश सरकार ने क्रांति के इन दीवानों की सज़ाएं मुकर्रर कर ली थीं, अत: लखनऊ के स्पेशल मजिस्ट्रेट एवं स्पेशल जज हेमिल्टन ने 'प्रोसीडिंग्स' केवल दिखावे के तौर पर कीं। सारे देश की जनता की कोमल भावनाओं को ठुकराकर 6 अप्रैल, 1927 को अदालत ने अपना फैलना सुना दिया।

पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल', अशफ़ाक़ उल्ला खां वारसी, रोशन सिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी को फांसी की सज़ा दी गयी। कमाल तो देखिये सरकारी वकील जगतनारायण मुल्ला का कि रोशनसिंह ने न तो 'काकोरी केस' में भाग लिया था, न ही उनके विरुद्ध हत्या का अभियोग था, फिर भी उन्हें फांसी की सज़ा सुना दी गयी। राजेन्द्र लाहिड़ी दक्षिणेश्वर में बम बनाते हुए पकड़े गये और इस समय 10 वर्ष की सज़ा भुगत रहे थे, फिर भी उन्हें बलि का बकरा बना दिया गया। शचीन्द्रनाथ बख़्शी को काले पानी की सज़ा हुई। योगेशचन्द्र चटर्जी, मन्मथनाथ, गुप्त, गोविन्दचरण कर, रामकृष्ण खत्री, विष्णु सरन दुबलिस, सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य, भूपेन्द्रनाथ सान्याल, रामदुलारे द्विवेदी, प्रेमकृष्ण खन्ना, प्रणवेश चटर्जी और बनवारी लाल को 14 वर्ष से 5 वर्ष तक की सख़्त सज़ाएं सुनायी गयीं।

- क्रमश:

- धर्मेन्द्र गौड़ :

साभार : क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25, 26, 27, 28 अक्टूबर 2018

सम्मेलन स्थल :- स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85
विश्व शान्ति यज्ञ, योग व तपोनिष्ठ संन्यासियों, वैदिक विद्वानों द्वारा सत्संग
तथा प्रवचन का लाभ उठाने हेतु लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।
सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 9540029044
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org
YouTube : thearyasamaj 9540045898

एक रुपीय यज्ञ हेतु दिल्ली में अनेक स्थानों पर यज्ञ प्रशिक्षण : विश्व रिकार्ड की तैयारी

आप आर्यसमाज के अधिकाधिक सदस्यों के साथ भाग लें : प्रशिक्षण/जानकारी हेतु श्री सतीश चड्डा जी 9313013123 से सम्पर्क करें

दिल्ली में अक्तूबर, 2018 में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर होने वाले विशाल एक रूपीय यज्ञ की तैयारी हेतु दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों एवं संस्थाओं में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए। इस अवसर पर शिविर में भाग लेते आर्य पुत्री पाठशाला आर्यसमाज गांधी नगर, हंसराज मॉडल स्कूल भलस्वा, आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर, आर्य मॉडल स्कूल बादली के विद्यार्थियों एवं अध्यापिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थी, महिलाएं, पुरुष ब्रह्मचारिणियां विशाल एकरूपीय यज्ञ कार्यक्रम में भाग लेंगे। यदि आप भी यह प्रशिक्षण शिविर अपने आर्यसमाज/विद्यालय/संस्थान में आयोजित करना चाहते हैं तो यज्ञ व्यवस्था संयोजक श्री सतीश चड्डा जी से 9313013123 पर सम्पर्क करें।

मॉरिशस में 11वां विश्व हिन्दी सम्मेलन सम्पन्न : डॉ. सत्यपाल सिंह से मिले आर्य सभा मॉरीशस के अधिकारी

हिन्दी को भविष्य और विश्व की भाषा बनाने के संकल्प के साथ 11वां विश्व हिन्दी सम्मेलन 18-20 अगस्त तक मारीशस की राजधानी पोर्ट लुइस में संपन्न हुआ। इस मौके पर जो अनुशंसाएं की गईं उसमें मुख्य जोर हिन्दी को सूचना-प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर की भाषा के रूप में विकसित करने पर दिया गया।

यहां गोस्वामी तुलसीदास नगर के विशाल सभागार में आयोजित समापन समारोह में गीतकार प्रसून जोशी और मॉरीशस के दिवंगत साहित्कार अभिमन्यु अनन्त सहित देश-विदेश के विद्वानों को विशिष्ट हिन्दी सेवी सम्मान से नवाजा गया।

सी-डैक समेत कई संस्थाओं को भी हिन्दी के साफ्टवेयर और टूल विकसित करने के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मॉरीशस के कार्यवाहक राष्ट्रपति परम शिव पिल्लै वयापुरी ने कहा कि समय आ गया है कि हिन्दी को दुनिया में बराबरी का दर्जा मिलना चाहिए। इसके लिए सभी को प्रयास करना होगा। उन्होंने अपने संबोधन की शुरुआत भी हिन्दी से की।

तीन दिन के सम्मेलन में चर्चा के जो आठ सत्र हुए, उनकी अनुशंसाएं भी रखी गईं। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र से प्रसारित होने वाले साप्ताहिक हिन्दी बुलेटिन को भी दुनिया भर से आए हिन्दी प्रेमियों को सुनाया गया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री सत्यपाल सिंह जी मॉरीशस आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हरिदेव रामधनी जी एवं वरिष्ठ आर्य नेता श्री उदय नारायण गंगू जी उपस्थित रहे।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढ़वाल द्वारा महासम्मेलन का प्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढ़वाल द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली गढ़वाल, उत्तराखण्ड से सहभागिता हेतु प्रचार-प्रसार अभियान के अन्तर्गत आर्य समाज कोटद्वार में वेद प्रचार-प्रसार कार्यक्रम के अवसर पर 'दिल्ली चलो, तीर्थ करो' को लेकर उपसभा के प्रधान-श्री सुखदेव शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री नन्दन सिह रावत, सहित मंत्री मनमोहन आर्य द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली संबंधी निमंत्रण देकर लोगों से दिल्ली चलने का निवेदन किया गया।

रक्षासूत्र बांधे

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित कन्या गुरुकुल सैनिक विहार एवं आर्य गुरुकुल रानी बाग के गुरुकुल के छात्र-छात्राओं ने रक्षाबन्धन का त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर समेत गुरुकुल के आचार्य सुनील, आचार्या सुमेधा, श्रीमती सुषमा चावला, गीता जी, ज्ञान माता जी एवं गुरुकुल के सभी सहयोगी उपस्थित रहे।

योगिराज भगवान श्रीकृष्ण जी के 5246वें जन्मदिवस (जन्माष्टमी) की हार्दिक बधाई

आओ ! जानें कैसे थे योगिराज श्रीकृष्ण

पूरा विश्व योगीराज भगवान श्री कृष्ण जी का जन्मोत्सव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाता है। इस महा पुण्य पावन पर्व पर हम सभी देशवासियों से प्रार्थना करते हैं कि भारत की धरा पर दो ऐसे चमकते सितारे पैदा हुए थे जिनकी ज्योति से आज भी विश्व में भारत का स्थान सम्माननीय है। भारत माता के ये दो सपूत सर्वगुण सम्पन्न थे। जिनका नाम बच्चा-बच्चा जानता है-योगिराज भगवान श्री कृष्ण जी एवं मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी।

लेकिन आज हमारी अपनी ही भूमि पर कुछ लोग छल और कपट का सहारा लेकर इन्हें बदनाम कर रहे हैं। आप भी मठ-मन्दिरों व राह चलते निम्न गीत प्रचार के नाम पर या भक्ति के नाम पर सुनते होंगे। यथा-

★ छलिया का भेष बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया.....

★ इकली घेरी वन में आइ, श्याम तैने कैसी ठानी.....

★ मैया कर दे मेरो ब्याह..... ★ राधा क्यों गोरी मैं क्यों काला.....

इन सब अनेक प्रकार की दुष्प्रचार सामग्री को देखकर हम श्री कृष्ण जी के वास्तविक स्वरुप को इस बार जन्माष्टमी पर आपके सामने रखने का प्रयास कर रहे हैं।

1. 18 अगस्त, 2014 को भगवान श्री कृष्ण जी का 5242वाँ जन्मोत्सव है।
2. भगवान श्री कृष्ण जी के समान योगीराज अब तक धरती पर पैदा नहीं हुआ।
3. भगवान श्री कृष्ण जी को 'माखनचोर' बताने वाले महापापी हैं।
4. भगवान श्री कृष्ण जी ने कभी किसी गोपी के चीर (वस्त्र) नहीं चुराए।
5. भगवान श्री कृष्ण जी को चीर (वस्त्र) चुराने वाला कहने वाले कपटी व छली हैं।
6. पौराणिक लेखकों ने पैसे खाकर भगवान श्रीकृष्ण जी पर मनमाने दोष लगाए।
7. भगवान श्री कृष्ण जी की 'राधा' नाम की कोई प्रेयसी नहीं थी।
8. भगवान श्री कृष्ण जी की कभी भी 16108 रानियाँ नहीं रहीं।
9. भगवान श्री कृष्ण जी की केवल एक ही धर्मपत्नी भगवती रूक्मिणी जी थीं।
10. भगवान श्री कृष्ण जी एवं भगवती रूक्मिणी ने स्वयंवर करके सर्वश्रेष्ठ गृहस्थ आश्रम

में सुप्रवेश किया था।

11. भगवान श्री कृष्ण जी अत्याचारियों को दण्ड देने में उद्यत रहते थे।
12. भगवान श्री कृष्ण जी सज्जनों की रक्षा में सदैव लगे रहते थे।
13. भगवान श्री कृष्ण जी गरीबों की सहायता

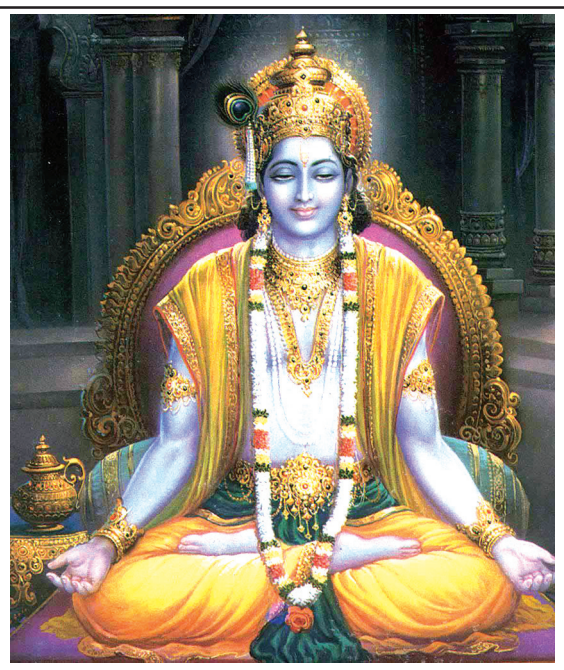

करते थे- उदाहरण सुदामा।

14. भगवान श्री कृष्ण जी स्वयं ईश्वर की उपासना करते थे।
15. भगवान श्री कृष्ण जी सुबह और शाम संध्या (ईश्वरोपासना) करते थे।
16. भगवान श्री कृष्ण जी प्रतिदिन सुबह-शाम हवन (देवयज्ञ) करते थे।
17. भगवान श्री कृष्ण जी पूरी दुनिया में सबसे बड़े बुद्धिमान राजनीतिज्ञ थे।
18. गीता संसार को जीवन-जीना सिखाने वाली पवित्र पुस्तक है।
19. गीता में मानव जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान है।

20. गीता हमें संघर्षकाल में भी शांतिमय जीवन

जीना सिखाती है।

21. नौ लाख गायों के मालिक को 'नंद' कहते हैं, फिर नंद के 'लाल' को माखन चुराने की जरूरत ही नहीं थी।

22. भगवान श्री कृष्ण जी का लगभग 125 वर्ष की आयु में देहान्त हुआ।
23. भगवान श्री कृष्ण जी योगीराज थे न कि चूड़ियाँ बेचने वाले।
24. भगवान श्री कृष्ण जी श्रेष्ठतम् गृहस्थी थे, न कि छलिया पुरुष।
25. भागवत ग्रंथ लिखने वाले ने 'भगवान श्री कृष्ण जी' के जीवन में अनेक गपोड़े जोड़ दिए हैं। उनके चरित्र को बदनाम करने वालों का हम घोर विरोध करते हैं।

आप भी इसे पैम्पलेट के रूप में प्रकाशित/फोटोकॉपी कराकर जन साधारण में अधिकाधिक वितरित करें।

Veda Prarthana - II
Regveda - 17

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कर्विमनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।

– यजुवेद 40/8

Sa Paryagat shukram akayam avarnam asnaviram shudham apapviddham.
Kavirmanishi paribhuh svayambhuh yathatathy ato arthan vyadadhat shashvatibhyah samabhyah.

-Yajur Veda 40:8

Omnipresent God is Almighty and has No Shape or Form

- Acharya Gyaneshwarya

This Veda mantra in a succinct manner describes God's important attributes, works, and how God should be perceived whereby one can get rid of many prevailing false conceptions about God. All over the world, because of ignorance as well as wrong beliefs and traditions, there exist opposing and/or conflicting beliefs about God. The world has developed thousands of religions with their own founders, gurus/leaders and based upon their beliefs and traditions they pray and worship God in a variety of ways. All religions consder that their beliefs and traditions are right other's beliefs, principles and methods of worship wrong or misguided.

The first most important thing this mantra states is that God is present everywhere in the vast enormous universe whose dimensions are beyond our imagination. Omnipresent God is even greater than the universe and present beyond it. God is not stationed at one locale (in heaven) on a throne as believed by many religions, because if God existed only in the heaven, then He cannot be simultaneously Omnipresent and how did He create this vast uiverse sitting there. Instead, God is present in each and every particle of the universe. Moreover, God is Omnipotent, the Root Source of the energy, which maintains and keeps going the constantly changing and evolving universe. The surprise, however, is that God despite being Omnipresent and Omnipotent has no shape form or dimensions. God has no physical body, eyes, ears, nose, mouth, chest, belly, hands, feet or other body parts unlike human beings or animals. God does not have flesh, bones, nerves, arteries, or blood. God has no bodlly vulnerabilities such as thirst, hunger, pain or suffering, disease, or death. God is pure and holy, thus devoid of any vices, evil or sinsuch as jealousy, deception or cruelty. In all of these respects, God is completely different from human beings. God does not have any anthropomorphic form.

God is the Root Source of all true knowledge and is Omniscient because only an entity which is Omnipresent and without any shape or form can observe everything. God knows all our deeds since birth whether they be at thought, word or action level. Because He exists everywhere including our soul, He knows what goes on in our mind. Whereas we can hide our thoughts and true intentions from our parents, siblings, spouses. children but we cannot do so from All Knowing God.

In our world, an individual person or responsible authourities, due to ignorance, bias, favoritism, and corruption sometimes punish an innocent person and alternately let go a criminal. However, God's Justics is perfect and as the Karmaphaldata He is the Final Judge in the Universe. God is Judge of the human judges and the ultimate judgment in life belongs to Him. God gives appropriate good or bad rewards to all depending upon the person's past and present karmas-deeds, instead of giving favoritism to some. While, a cunning culprit/criminal may be able to escape punishment from worldly authorities, however, he/she will never escape God's final judgment.

God is the ultimate Benefactor and Provider.God nurtures and cares for the earth and the universe. God provides for the needs of all living things, whether men, birds, animals or other creatures. All living beings are God's subjects.

Omnipresent God at the beginning of mankind gives human beings true knowledge through the four Vedas. The Vedas, for the human being's welfare, describe both the spiritual, as well as secular aspects of knowledge and include such topics as God, His attributes, the attributes of the soul, the relationships of human beings to one another and to the community, society and other living things. Knowledge of the physical nature of the universe is also discussed. The messages of the Veda mantras are universal for the well being of all humans for all times and do not get old or out of date with the passage of time. If we properly understand Vedas virtuous teachings and follow them practically in our daily lives, then human beings will find happiness, peace and prosperity and a lasting solution to the prevailing many problems in the world.

Human beings should first correctly learn God's various attributes, works and how God is perceived as dscribed above in this mantra, and then meditate on God with devotion.To properly meditate, every morning and evening one should sit down in a quite peaceful place in a comfortable asan, do pranayam, then witheraw senses away from environmental distractions and stimlations, concentrate inwards in mind and contemplate on God's attributes and make an effort to acquire a small element of the same in one's personal daily life. When one lives virtuously in daily life by following God' teachings as dscribed in the Vedas as well as surrenders him/herself to God and prays with full devotion and commitment, then God in return rewards him/her in wonderful ways with true knowledge, wisdom and bliss.

A devotee of God, when he/she correctly prays to God with true devotion, then he/she gradually acquires an ability to initially subdue and then completely eliminate his/her internal mental enemies (vices) such as lust, anger, greed, morbid affection (infatuation) for others, jealousy, and false pride. Moreover, the person also develops courage, bravery, patience, becomes generous and develops the ability to help others in the society. He/she in union with other like minded persons, then make effort and succeed in eliminating social ills such as ignorance, corruption, deception. On the other hand, when one prays to a false God with incorrect attributes, one will encounter likely failure. Dear God, it is our sincere prayer to You that with Your grace, and by reading and learning from Vedic scriptures, may we understand and know Your true attributes and by meditating succeed in Your realization. Moreover, may we not be satisfied by our progresss only, but also help our society and nation towards achieving all types of prosperity.

To Be Continue....

शोक समाचार

भजनोपदेशक पं. तुलसीराम आर्य का निधन

दिल्ली एवं फरीदाबाद क्षेत्र में वैदिक भजनों से धर्मप्रचार करने वाले आर्य भजनोपदेशक पं. तुलसीराम आर्य जी का दिनांक 19 जुलाई को 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से मोलडबन्द विस्तार शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 24 जुलाई को फरीदाबाद मे सम्पन्न हुई।

पं. नौबतराम वानप्रस्थी का निधन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी सभा – श्रीमती परोपकारिणी सभा के यायावर प्रचारक श्री पं. नौबतराम वानप्रस्थी जी का गत दिनों निधन हो गया। वे प्रो. धर्मवीर जी के अनन्य सहयोगी थे।

श्री यशपाल सचदेवा जी का निधन

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी के संस्थापक सदस्य, पूर्व प्रधान तथा वर्तमान में संरक्षक के रूप में अपनी सेवाएं देने वाले श्री यशपाल सचदेचा जी का 28 अगस्त को निधन हो गया। उनकी स्मृति शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 31 अगस्त को आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों अधिकारियों एवं सदस्यों के साथ-साथ सभा अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

पं. लेखराम का कुर्ता व उनका जीवन

स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी पं. लेखरामजी के जीवन की निम्न घटना बहुत भावविभोर होकर सुनाया करते थे।

एक बार वीरवर लेखराम जालन्धर में लाला मुंशीरामजी (स्वा. श्रद्धानन्दजी) के पास आये। आर्यपथिक को कहीं आगे प्रचार के लिए जाना था। शीत ऋतु थी। वीर के पास दो कुर्त्ते थे। एक धुला हुआ और एक मैला। समय नहीं था कि मैले कपड़े धो लें। ठण्ड से बचने के लिए हुतात्मा ने उजला कुर्ता नीचे पहनकर मैला ऊपर पहन लिया। इसपर लाला मुंशीरामजी वकील ने कहा कि पण्डितजी मैला कुर्ता अन्दर कर लें बाहर ठीक नहीं लगता।

पण्डितजी ने कहा, ''बाबूजी तन के साथ मैला वस्त्र स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। मैं दिखानेमात्र के लिए ऊपर उजला कपड़ा नहीं पहनूँगा। हानि-लाभ भी तो देखना चाहिए।''

महापुरुषों के जीवन का यही सार है। अन्दर मैल नहीं होनी चाहिए। मन शुद्ध होना चाहिए। शुद्ध, उच्च जीवन की यही तो कसौटी है। अन्दर मैल और बाहर उजलापन हो तो छल-कपट है।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

आर्य समाज अशोक विहार फेज-1 के तत्त्वावधान में श्रावणी उपाकर्म एवं भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव पर ध्यान योग साधना एवं सामवेदीय यज्ञ आचार्य श्री आर्य नरेश जी के सानिध्य में किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत बच्चों की भाषण प्रतियोगिता 'भगवान श्री कृष्ण का वास्तविक स्वरूप' विषय पर आधारित होगी। *-जीवनलाल आर्य, मंत्री*

आर्य वर चाहिए

कैलिफोर्निया यू.एस. में सेवारत गौरवर्ण, लम्बाई 5'2'' बी.टेक., एम.एस.; जनवरी 1991 में दिल्ली में जन्मी व दिल्ली में शिक्षित कन्या हेतु सुयोग्य यू.एस. अथवा कैनेडा में सेवारत वर चाहिए।

सम्पर्क करें – 8826880879, 9911089810, 9911116869।

ठहरने के लिए क्या आप 'होटल' चाहते हैं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आप की भागीदारी महत्त्वपूर्ण है। आप सभी का सहर्ष स्वागत है। आप इस अवसर पर अधिकाधिक संख्या में आएँ और अन्यों को इसके लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर यदि आप ठहरने के लिए होटल में आवास सुविधा चाहते हैं तो संयोजक समिति द्वारा कुछ होटलों में सशुल्क आवास व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है। सामान्य होटल करोल बाग क्षेत्र में मैट्रो के निकट, रोहिणी क्षेत्र में 2 स्टार ओयो रुम सम्मेलन स्थल से 2 किमी क्षेत्र में तथा 3 स्टार होटल सम्मेलन स्थल से 3-4 किमी की दूरी पर हैं। प्रत्येक होटल के एक कमरे में दो व्यक्तियों के ठहरने की व्यवस्था है अटैच बाथरूम। होटल शुल्क (सभी करों सहित) इस प्रकार है-

सामान्य होटल : 1500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

2 स्टार ओयो रुम : 2500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

3 स्टार (विद ब्रेक फास्ट) : 3500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

यदि आप कमरे में तीसरे बैड की व्यवस्था चाहते हैं तो अतिरिक्त शुल्क पर बैड उपलब्ध हो सकेंगे। उसके लिए आपको स्वयं होटल में बात कर लें। अनुमानित रूप से तीसरे बैड के लिए सामान्य होटल में 300/-, 2स्टार में 500/- तथा 3 स्टार में 800/- रुपये में देय होंगे। अतिरिक्त बैड की ये दरें अनुमानित हैं। इसके लिए आप स्वयं अपने आबंटित होटल में पहुंचकर बात करें।

कमरे पूर्णत: वातानुकूलित और आवश्यक सुविधाओं से युक्त हैं। यदि सुविधा का लाभ उठाना चाहते है तो देय राशि का बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम बनाकर अपने नाम,पता एवं दूरभाष सहित पूर्ण विवरण पत्र द्वारा सम्मेलन कार्यालय को भेजें।

नोट : आप स्वयं भी रोहिणी, पीतमपुरा, शालीमार बाग एवं आस-पास के क्षेत्रों में धर्मशाला/होटला ओयो रुम विभिन्न बैवसाइटों के माध्यम से बुक करा सकते हैं आप द्वारा स्वयं बुक कराने से सम्भव है कुछ कम राशि में बुकिंग हो सके।

- संयोजक, आवास समिति

आवास व्यवस्था हेतु कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर यदि आप सम्मेलन स्थल मैदान में ही बनें आवासों में ठहरने की व्यवस्था चाहते हैं तो कृपया ध्यान दें -

1. सम्मेलन के दिनों में रात्रि का मौसम हल्की ठंड वाला होगा। अत: अपने ओढ़ने एवं बिछाने के लिए सामान्य चादर या पतला कम्बल अवश्य साथ लाएं, जिससे आपको सुविधा हो।

2. जो महानुभाव ग्रुप में आ रहे हैं। वे अपने ग्रुप लीडर का नाम, पता, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर आवास समिति के नाम सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमल करें। अपने ईमेल/पत्र पर **"आवास व्यवस्था हेतु"** अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था की जा सके।

जो व्यक्ति एक साथ, एक ही साधन से एक ही समय पर पहुंच रहे हैं, उसे ही ग्रुप कहा जाएगा। अत: यदि आप एक ही संस्था/आर्यसमाज के सदस्य होने पर भी अलग-अलग समय/साधन से आ रहे हैं तो उसके लिए पृथक से ग्रुप लीडर बनाएं और उसी के हिसाब से पधारने वाले सज्जनों की सूची भेजें।- *संयोजक, आवास*

रेल यात्रा से पधारने वाले आर्यजनों के लिए ट्रांस्पोर्ट (यातयात) व्यवस्था : कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि महासम्मेलन आयोजन समिति की ओर से दिनांक 24 अक्तूबर की प्रात: से देर रात्रि 25 अक्तूबर तक दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, हजरत निजामुद्दीन, आनन्द विहार, सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशनों पर देश के विभिन्न राज्यों से महासम्मेलन में भाग लेने के लिए पधारने वाले आर्य श्रद्धालुओं को महासम्मेलन स्थल - "स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी दिल्ली-85" तक पहुंचाने के लिए बसों की व्यवस्था की गई है। आप कहां से, कब, कितने बजे किस स्टेशन पर पहुंच रहे हैं इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमल करें। अपने ईमेल/पत्र पर **"आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था हेतु"** अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था की जा सके। इसी प्रकार 28 अक्तूबर की प्रात: से देर रात्रि तक सम्मेलन स्थल से वापस रेलवे स्टेशन तक जाने के लिए भी बसों की व्यवस्था की गई है। आर्यजन इस सेवा का लाभ उठावें। *- संयोजक, यातायात समिति*

श्री कृष्ण जन्मोत्सव एवं आर्य समाज वार्षिकोत्सव : आर्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव, द्वारा 30 अगस्त से 2 सितम्बर तक श्रीकृष्ण जन्मोत्सव एवं वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। प्रवचन आचार्य श्याम जी, डॉ महेश विद्यालंकार जी एवं भजन लक्ष्मीकान्त आर्य के होंगे। आशु कवि श्री विजय गुप्त जी भी अपनी प्रस्तुति देंगें। *-रविदेव गुप्ता, प्रधान*

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018

ध्यान देने योग्य बातें

1. महासम्मेलन में स्वयं तो आएं साथ में अपने परिवार व बच्चों को भी साथ लावें।
2. अपनी संस्थाओं के आर्यवीर/ आर्य वीरांगनाओं विद्यार्थियों को परिवार सहित साथ लावें। अपने इष्ट-मित्रों, सम्बन्धियों को महासम्मेलन में आने के लिए प्रेरित करें।
3. अपने साथ कम से कम सामान लाए। कीमती सामान बिल्कुल न लाएं।
4. ऐसे परिवारों को अवश्य आमंत्रित करें जो पहले कभी आर्य समाजी थे पर किन्हीं कारणों वश अब आर्य समाज से सम्बन्ध नहीं रख पा रहे हों।

सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018
25-28 अक्तूबर, 2018 : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै.-10, रोहिणी, दिल्ली

मुख्य पंजीकरण फार्म

पंजीकरण संख्या ..... जन्मतिथि:...../...../.....

नाम.....

पिता/पति का नाम .....

मोबाइल .....व्हाट्एप्प.....

फोन (नि.) .....(कार्या.).....

ई-मेल .....

पूरा पता .....

.....

राज्य .....देश .....पिन ☐☐☐☐☐☐

शैक्षिक योग्यता (अन्तिम): .....

व्यवसाय: व्यापार ☐ सेवारत ☐ सेवानिवृत ☐ अन्य ☐

यदि सेवारत हैं तो पद .....

संस्था का नाम-पता.....

.....

सम्बन्धित आर्यसमाज/संस्था का नाम .....

क्या आप भविष्य में सभा द्वारा भेजी गई सभी सूचनाओं के SMS/Whatsapp अपने दिए गए मोबाईल पर प्राप्त करना चाहेंगे? हां ☐ नहीं ☐

दिनांक ..... हस्ताक्षर .....

पंजीकरण संख्या ..... जन्मतिथि:...../...../.....

नाम.....

दिनांक ..... समय .....

(हस्ताक्षर कार्यालय प्रतिनिधि)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018, दिल्ली

रेल भाड़े में 50% छूट : अभी से रेलवे आरक्षण कराएं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली में भाग लेने हेतु दिल्ली आने वाले सभी आर्य महानुभावों को भारत सरकार की ओर से रेल भाड़े में 50% की छूट प्रदान की गई है। छूट का लाभ लेने वाले महानुभाव अपनी आर्यसमाज/संस्था के लैटर हैड पर पधारने वाले सदस्यों की सूची नाम-पता-आयु-मो. नं. के साथ बनाकर भेजें। सम्मेलन कार्यालय की ओर से तत्काल रेल भाड़ा छूट फार्म कोरियर/स्पीडपोस्ट द्वारा भिजवा दिए जाएंगे। रेलवे भाड़ा छूट प्राप्त करने हेतु निर्देश -

1. एक व्यक्ति हेतु एक फार्म भरा जाएगा। टिकट आने-जाने की एक साथ होगी।
2. दिल्ली से 300 किमी से अधिक की दूरी वाले महानुभावों को ही इस छूट का लाभ प्राप्त हो सकेगा।
3. जिन महानुभावों - वरिष्ठ नागरिकों/ स्वतन्त्रता सेनानियों/दिव्यांगों को पहले से ही रेलवे द्वारा छूट दी जा रही है उन्हें इस छूट का लाभ नहीं हो सकेगा।
4. छूट केवल दूसरे दर्जे/श्यनयान दर्जे के लिए ही प्राप्त की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए **श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी को 9211333188** पर व्हाट्एप्प करें aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें अथवा महासम्मेलन कार्यालय को लिखें अथवा।- *संयोजक*

आर्य समाज सी पी ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली	आर्य समाज मस्जिद मोठ नई दिल्ली
प्रधान - श्री ब्रतपाल भगत	प्रधान - श्री चतर सिंह नागर
मन्त्री - श्री सोहन लाल आर्य	मन्त्री - श्री ओम प्रकाश सैनी
कोषाध्यक्ष - श्री राकेश ठुकराल	कोषाध्यक्ष - श्री देवेन्द्र कुमार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110 001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2018–19–2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30–31 अगस्त, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018–19–2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 अगस्त, 2018

प्रतिष्ठा में,

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

सभी आर्य समाजें व आर्य संस्थाएँ विज्ञापन अवश्य भेजें

यदि आप सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में विज्ञापन रूप में अपनी आर्यसमाज / संस्था की विशेष गतिविधियों का विवरण प्रकाशित करना चाहते है, जिससे आर्यसमाज के इतिहास में आपकी संस्था का नाम अंकित हो। स्मारिका 15 अक्टूबर तक तैयार हो जायेगी और 23×36×8 साईज में प्रकाशित होगी। पूरे पृष्ठ का विज्ञापन साईज 7.5"×10" का एवं आधे पृष्ठ का साईज 7.5"×5" होगा। आप अपना चैक/ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – महासम्मेलन–2018"** के नाम केवल खाते में उक्त पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। विज्ञापन सामग्री एवं डिजाइन हमें 30 सितम्बर 2018 तक अवश्य भिजवा दें। दरें निम्न प्रकार हैं –

(श्वेत श्याम विज्ञापन)		(रंगीन- चार रंगों में विज्ञापन)	
1. चौथाई पृष्ठ	5000/-	4. चौथाई पृष्ठ	7500/-
2. आधा पृष्ठ	7500/-	5. आधा पृष्ठ	12500/-
3. पूरा पृष्ठ	10000/-	5. पूरा पृष्ठ	21000/-

विज्ञापन, संस्था/आर्यसमाज/ पारिवारिक परिचय दें : यदि आप अपना कोई विज्ञापन, अपनी संस्था/आर्यसमाज/ अपने परिवार के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो आप विज्ञापन के रूप में अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं।

विद्वानों/लेखकों से निवेदन : सभी वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से निवेदन है कि आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों जिनके कार्यों को आजतक किसी ने नहीं जाना–पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेखों को ए–4 साईज के पेपर पर बाएं साईड में कम से कम 2 इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर **'स्मारिका सम्पादक', अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2018, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली –110001** ' पर या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करने की कृपा करें। – **अजय सहगल, सम्पादक**

प्रथम पृष्ठ का शेष

बार भी आप सभी लोग सभा के माध्यम से केरल के बाढ़ पीड़ितों की सहायता करेंगे, आपकी छोटी सी मदद किसी के लिए नवजीवन और मुस्कान दे सकती है।

समस्त पाठकों, आर्यजनों एवं आर्यसमाजों व आर्य संस्थानों के अधिकारियों व सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि अपने परिवार/अपनी संस्था की ओर से अधिकाधिक सहयोग राशि निर्मलिखित बैंक खाते में जमा कराएं अथवा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम कैम्प कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001 के पते पर भेजे–

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'
खाता सं. **09481000000276**
IFSC Code : PSIB0020948
पंजाब एंड सिंध बैंक

कृपया राशि जमा कराने के तुरन्त बाद अपना नाम, पता, पैन नं. एवं डिपोजिट स्लिप की फोटो श्री मनोज नेगी जी को 9540040388 पर व्हाट्सएप्प करें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें जिससे आपको रसीद भेजी जा सके।

– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह